Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

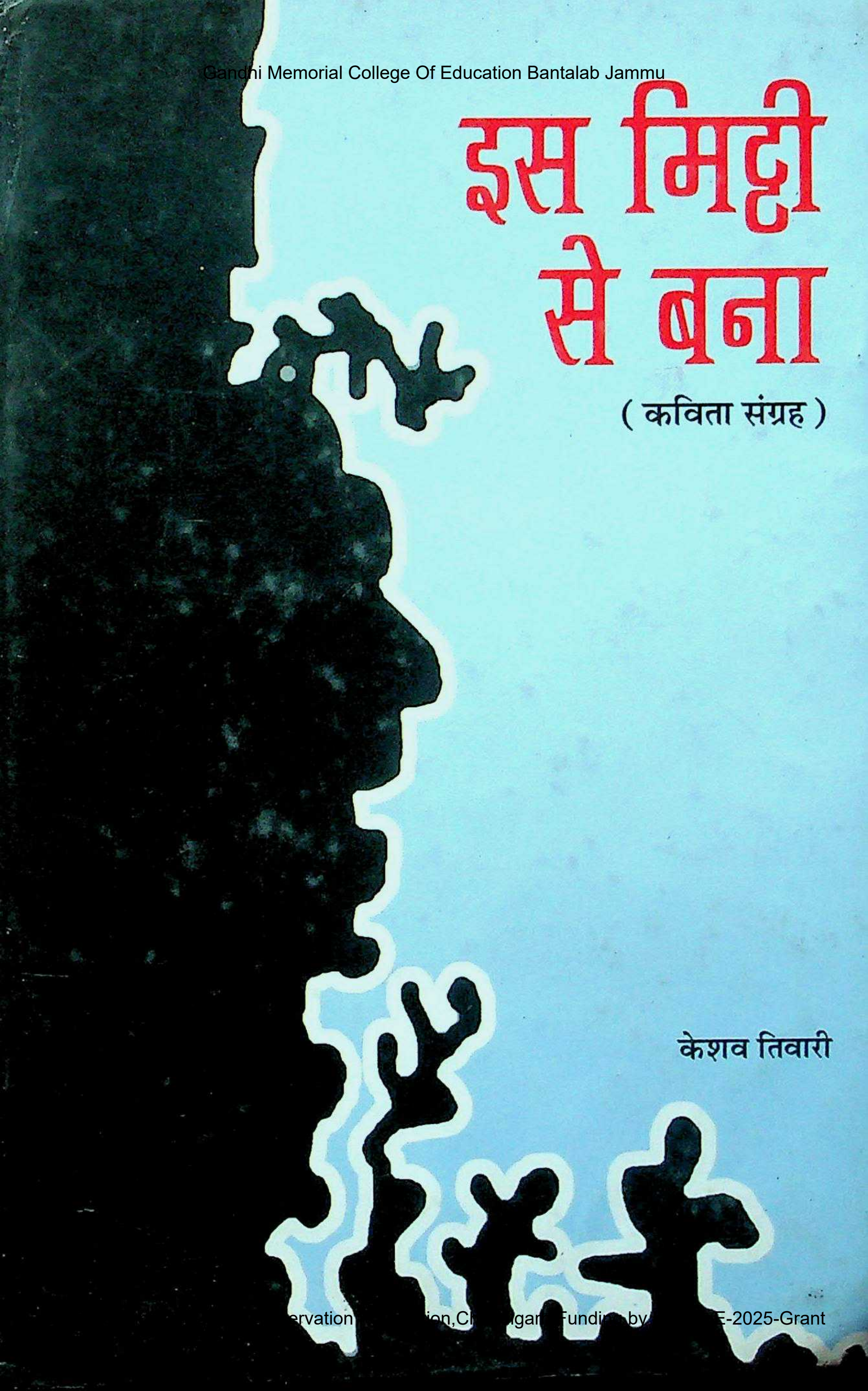

इस मिट्टी से बना

(कविता संग्रह)

केशव तिवारी

ervation ion,Ch lgar Fundi by E-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नई कविता के दौर में हिन्दी कविता केवल मध्यवर्ग तक सीमित रह गई और धीरे–धीरे कविता लोक और जनजीवन से कटकर हास्यास्पद हो गई। कोरा कलावाद किसी कवि को अधिक समय तक जीवित नहीं रख सकता। उसकी प्रशंसा केवल कुछ आलोचक करते हैं। सुधी पाठकों के बिना न कविता का वर्तमान है न भविष्य। कविता की इस दुर्दशा से दुःखी होकर कुछ आलोचकों ने कविता के भविष्य पर ही प्रश्नचिन्ह लगा दिया।

केशव तिवारी की कविताएँ हिन्दी जगत को आश्वस्त करती हैं कि हिन्दी कविता का भविष्य बहुत उज्ज्वल है। केशव के यहाँ लोक किसी फैशन के आधार पर नहीं है बल्कि जीवन की प्रमुख आवश्यकता के रूप में है। उनकी कविताओं में साधारणजन के प्रति गहरी सहानुभूति और सघन संवेदना भी है। वैश्वीकरण भारत की एकता, अखण्डता के लिये संकट उत्पन्न कर रहा है, लेकिन इसके साथ ही आत्मनिर्भरता और स्वाभिमान के सामने भी बड़ा प्रश्न चिन्ह है। केशव की कविताओं में इस व्यवस्था का प्रतिरोध भी है और उसके उजले पक्ष का चित्रण भी है।

> यह सब देखकर लग रहा है
> अभी यहाँ बाजार
> जरूरतें नहीं तय कर रहा है।

केशव की ये कवितायें उस मधुर संगीत की तरह हैं जो धीरे–धीरे हमारे मन–मस्तिष्क पर पैर जमाकर बैठ जाता है। ये कविताएँ हमें आश्वस्त करती हैं कि साधारणजनों के सुख–दुःख और उनके संघर्षों को कलात्मक अभिव्यक्ति देने वाली कविता ही, हिन्दी कविता की सच्ची परम्परा है। इन कविताओं में हमारी लोक परम्पराओं का विस्तार और विकास है।

-प्रो. कुंवरपाल सिंह

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

आवरण चित्र : माधव जोशी

प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन (repeated pattern on flap)

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

G.M. College of Education
Raipur, Bantalab
Jammu
Acc. No.
Dated

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

अम्मा और बाबू के लिये
जो अब नही रहे
और
छोटी बहन नीलू के लिये भी
जिसने इन कविताओं को उतारने
का भागीरथ श्रम किया.

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भूमिका

इधर जिन लोकधर्मी कवियों ने अपनी पहचान बनाई है उनमें केशव तिवारी प्रमुख हैं। आज अनेक जाने–माने कवि ऐसे भी हैं जिनके पास न तो अपनी ज़मीन है न अपने बीज। केशव तिवारी पर अपनी उर्वर ज़मीन भी है और बीज भी। ऐसी कविता सदा लोक–धर्मी होती है। अपनी ज़मीन छोड़कर लिखना वैसा ही है जैसे देसी घोड़ी चाल विलायती। हिन्दी के बहुत कम कवि ऐसे हैं जो बनते बिगड़ते भारत की झलक अपनी कविताओं में दे पाते हैं। यह इसलिये है कि हिन्दी के कवियों का बहुत बड़ा समुदाय अपनी जातीयता को न तो पहचानता है, न उसे मन से प्यार करता है। यह वही कवि कर सकता है जो अपने किसी जनपद से जुड़ा हो। उसे अपनी भाषा से प्यार हो। जो अपने इलाके की बोली से अपनी खड़ी बोली को सींचता हो। कवि केशव तिवारी अपनी हिन्दी को अपनी इलाके की बोली से समृध्य करते हैं। यह बात वह सायास नहीं अपितु अपना कवि–धर्म निभाने को ही करते हैं। उनके काव्य विषय उनके आस–पास के जीवन से ही लिये गये हैं। वह आम आदमी के बहुत पास हैं। उसके संघर्ष को निहारते ही नहीं उसमें बड़े साहस से शिरकत भी करते हैं। यही वजह है कि उनकी कवितायें अपने आस–पास की प्रकृति, भूआकृतियों और दृश्यावलियों को गाढ़े रंग से चित्रित करती हैं। आज का यही नयापन है। परोक्षतः उत्तराधुनिकता का सम्यक्, प्रतिरोध भी। बहुत सारी हिन्दी कविता में ये सब विरल है। कहें कि गायब है। इसकी जगह वाग्मिता, शब्द चमत्कार, और मुद्राओं ने ले ली है। केशव तिवारी की कवितायें अपनी जातीयता की जड़ों से फूटती हैं। देशज शब्द अंकुरित होते हैं। अतः उनकी काव्य–भाषा में ठेठ हिन्दी का मुहावरा रचा जान पड़ता है। उनकी भाषा ने अवधी और बुंदेलखंडी से बराबर ताकत हासिल की है। कविता में जनपदीय चेतना को व्यक्त करना भारतीय कविता की बड़ी लंबी परंपरा है। यही वह लोकधर्मिता है जिसको निराला, नागार्जुन, केदारबाबू और त्रिलोचन विकसित करते रहे हैं। उसी परंपरा के कवि

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आज उसे आगे बढ़ा रहे हैं। यह प्रवृत्ति कविता में आज विरल है। मुझे प्रसन्नता है कि कवि केशव तिवारी उसी लोकधर्मी परंपरा को विकसित करने में लगे हैं।

केशव तिवारी सही अर्थों में समकालीन हैं। जितने कवि आज लिख रहे हैं जरूरी नहीं कि वे सब समकालीन हों। समकालीनता काल के साथ हमारे विश्व दृष्टिकोण से जुड़ी चीज़ है। इसके लिये जरूरी है कि हम संघर्षशील भारतीय समाज की आन्तरिक गति को व्यक्त करें दूसरें, भारतीय लोकधर्मी लंबी परंपरा को नया करके उसे अग्रगामी बनायें। उसे नये आयाम दें। तीसरे, सर्वहारा के पक्ष में वर्तमान समाज को रूपान्तरित करने को बेचैन दिखें। मुझे केशव तिवारी की कविताओं में ये सब चीज़ें बड़े सहज और कलात्मक ढंग से घटित होती दिखती हैं।

केशव तिवारी मुक्त–छंद में लिखकर कविता को कभी गद्य नहीं होने देते। यह इन कविताओं की बेजोड़ खूबी है। हिन्दी कविता का बड़ा परिदृश्य आज मुक्त छंद के नाम पर उबाऊगद्य से पटा पड़ा है, पर इन कविताओं में वेगवान लयआद्यन्त कविता के समग्र संरचनात्मक स्थापत्य में व्याप्त है। हर कविता का अपना सुगठित संरचनात्मक स्थापत्य है। शब्दों को बड़ी सहजता से उनकी उपयुक्त जगह रखा गया है। इसीलिये कविताओं में सरचनात्मक संगति है। स्थापत्यमूलक सुगमता है। रूप और कथ्य की बड़ी लचीली और रूचिकर एकान्विति है।

इन कविताओं में भारतीय समाज के अन्तर्विरोधों का तीखापन है। वर्गीय समाज की टकराहटें है। उसकी विरूपतायें और विडंबनायें भी है। इसलिये कविताओं में सहज नाटकीयता पैदा हुई है। कवि ने नये नायकों की खोज की है। यहाँ पारंपरिक एलीट सौंदर्यबोध से बिल्कुल अलग और भिन्न जनवादी सौंदर्यबोध रचा गया है। कहना न होगा कि ऐसी ही समकालीनता आगे तक प्रासंगिकता बनाये रखती है।

ये कवितायें स्वतः स्फूर्त हैं। विचार कहीं से सायास नहीं थोपा गया। अपितु यहाँ विचार संवेदना के पुर्नगठन का कलात्मक परिण्माम बनकर सामने आया है। इसीलिये ये कवितायें अपने ख़ौफ़नाक समय को चुनौतियाँ देतीं लगती हैं। हम से गहरा आत्मीय संवाद करती है। कहीं हमारी रूढ़बाद्ध मान्यताओं को तोड़ती हैं। हमारी विवशता पर तीखा व्यंग्य करती हैं, पर आद्यन्त इन कविताओं में नये जनवादी मूल्यों को सृजित कर जीवन का नया पैटर्न रचा गया है। एलीट पाठक और समीक्षक के लिये ये कवितायें सौंदर्यबोध के स्तर पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नयी चुनौती हैं। शायद इसी अर्थ में ये कवितायें आज की होकर भी उस आगे के समय की हैं जब जनता के हाथ में सत्ता होगी। ऐसी कविताओं को हम कविता के अमरीकी नये प्रतिमानों से मूल्यांकित नहीं कर सकते। ऐसे कवियों को प्रकाशन और मूल्यांकन दोनों का इंतज़ार करना पड़ सकता है। उन्हें एलीट समीक्षकों की उपेक्षा भी सहनी पड़े। हो सकता है पुरस्कृत भी न हो, पर निस्संदेह ये कवितायें आज के बनते बिगड़ते भारत की कलात्मक तस्वीरें है। उसका धड़कता हृदय हैं। यहाँ की भूआकृतियों और प्रकृति का दर्पण है।

केशव तिवारी का यह पहला संग्रह हैं। ऐसा कई बार होता है कि कुछ एक कवियों का पहला संग्रह ही सर्वश्रेष्ठ और आखिरी होता हैं। ऐसी त्रासदी किसी कवि को न कसके– उसकी चिंता स्वयं कवि को होनी चाहिये। हमारे यहाँ कवि कर्म सबसे ज़्यादा कठिन और पवित्र कर्म माना जाता है। इसके लिये बड़ी तैयारी की ज़रूरत होती है। अतः केशव तिवारी को यह कविता एक चुनौती भरे दायित्व की तरह स्वीकार करना चाहिये। हर कवि का अगला काव्य संग्रह उसे नये दायित्वों से बाँधता है। इसके लिये न तो कोई शार्टकट है। न बनी बनाई पगडंडी। हर कवि को अपना पथ अलग ही बनाना पड़ता है। जो दूसरों के बने बनाये पथ पर चलने का दुस्साहस करते हैं उनका अवसान चौमासे में जवासे जैसा होता है। मैं यहाँ केशव तिवारी की ही काव्य पंक्तियों से अपनी बात समाप्त करता हूँ–

और वे जो कवि हैं
और कविता लिख रहें हैं
उनसे इसी दम कहो कि
कविता में ताप बनायें रखें
बर्षों की जमी बर्फ़
इसी से पिघलेगी

☯

इत्यलम्

विजेंद्र

सी–133, वैशाली नगर, जयपुर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अग्निशेखर और क्षमा कौल
द्वारा यह
पुस्तक सप्रेम भेंट

अनुक्रम

खुरदरी हथेलियों से 13
कुमाऊँ 14
बेतवा तट एक रात 16
हो चुकी मौसम की पहली बारिश 17
जैसे–जैसे पहाड़ों पर गहराती है रात 18
अवधी 20
विवाह के पूर्व 21
हम का बूझें 23
भट्ठहा 25
तुम आओ तो 27
ये वहीं पर गा रही हैं 28
अब भी होंगे बच्चे 29
बाँदा 31
पाठा की बिटिया 33
कोरियों का डेरा 35
तीजनबाई 36
बेनीमाधव 37
लड़कियाँ, लड़कियाँ होने से घबराती नहीं 39
धरती जानती है 40
आदमी और पहाड़ 42
यह दुःख तो टिकेगा ही 44
दादा नहीं जानते हैं 45
चौथ का चाँद 47
फिलहाल तो ये पतंगें हैं 48
भरथरी गायक 49
स्वागत है 50
नहीं मेरे बेटे नहीं 52
विरासत 53
गवनहार आजी 54
माँ 56
इन्तज़ार 57
पिता 58
जरूर बाँचेगा समय 59
तानसेन 60
जब भी देखता हूँ 62
तुम इतना क्यों सोचते हो पीरू 63
यह सुख किसका है 64
नानी 65
कम नहीं होते तिरासी साल 67
बग्गड़ 69
लेनिन तुम फटा कोट नहीं हो 71
उदास टहनियों को हरे पत्ते सौंपते हुए 73
बिसात बिछी है 77
खैराड़ा जंक्शन का गेट मैन 79
आप व्यर्थ परेशान हैं श्रीमन ! 80

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रहालय	81	99	शाम ढलते ही
पहली बार लगा	83	100	बाज़ीगर
खोजो उन हाथों को	85	102	थियान आनमन हो या फिलिस्तीन
अनुबंध	86	104	नदी
बूढ़े जब दे रहे थे सूर्य को अर्घ	88	106	हाट
और अमर हो जाऊँगा	90	107	लावनी
वे	91	108	इन दिनों
कब तक बचे रहेंगे	93	109	घड़ा
बाँके	94	111	हवाओं से कहो
बस इसी तरह	96	112	दीवट का दिया
फिर भी जाने क्यों	97		

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस मिट्टी से बना

केशव तिवारी

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खुरदरी हथेलियों से

अबकी बचा रहा गेहूँ
गेरुआ के प्रकोप से
बची रही सरसों माहू की मार से
खूब हिली सुग्गे राजा की लाल चोंच
गेहूँ के हरे खेतों के बीच
जड़े हुये माणिक की तरह
विलमता रहा मन पियराई
गहगहाई सरसों के बीच
यह समय है बीच खेत में
खड़े होकर दूर–दूर तक निहारने का
खुरदरी हथेलियों से
टीसती बिवाइयाँ सहलाने का
कुँआरियों का बड़ी–बूढ़ियों से
किसी पुराने विवाह–गीत के मनुहार का
और यह समय है, सूअरों के भी
थूँथन उठाने का।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कुमाऊँ

मैं बहुत दूर से थका हरा आया हूँ।
मुझे प्रश्रय दो कुमाऊँ
ये तुम्हारे ऊँचे पर्वत जिन पर जमा ही रहता है।
बादलों का डेरा
कभी दिखते कभी विलुप्त होते
ये तिलिस्मी झरनें तुम्हारें सप्तताल
तुम इनके साथ कितने भव्य लगते हो कुमाऊँ
शाम को घास का गट्ठर सर पर रखे
टेढ़े–मेढ़े रास्ते से घर लौटती
घसियारी गीत गाती औरतें
रजूला की प्रेम कहानियों में डूबा
हुडुक की धुन पर थिरकता
वह हुड़किया नौज़वान
उस बच्चे की फटी झोली से उठती
हींग की तेज महक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम उसकी महक में बसे हो कुमाऊँ
यह मौसम सेबों के सुर्ख होने का है।
आड़ुओं के मिठास उतरने का है
और तुम्हारी हवाओं में कपूर की
तरह घुल जाने का है
उनके भी घर लौटने का मौसम है।
जिन्हें घर लौटते देखकर मीलों दूर से
पहचान जाती है तुम्हारी चोटियाँ,
कुमाऊँ !

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेतवा तट एक रात

ठंड से ठिठुरती चाँदनी रात
कभी बादलों की रजाई ओढ़ता
कभी हटाता गहरी नींद में
कुनमुनाता चाँद
आसमान को बाँह में लेने को आतुर
पूरे विस्तार से बाहें उठाये पेड़
कभी पहाड़ों से लिपटती
कभी धकियाती बेतवा
हवा के साथ–साथ बहता उन्माद
इस समय यहाँ पर तो
उन चित्रकारों को होना चाहिये
बासी पड़ रहे हैं जिनके रंग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हो चुकी मौसम की पहली बारिश

☯

हो चुकी मौसम की पहली बारिश
बच्चे निकले नहीं घरों से
नहीं खेले काल–कलौटी
तैराई भी नहीं काग़ज़ की नावें
गुमसुम भींगते रहे पेड़ खड़े–खड़े
छीजते रहे कच्चे मकान
अरराकर बैठ गई
पुरखों के ज़माने की
सीझी पोखी दीवार
लावनी में जुटी लड़कियों के
स्वरों को, मार गया है काठ
उदास रीते बादल लौट रहे हैं
पहाड़ों की ओर
हो चुकी मौसम की
पहली बारिश।

☯

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जैसे-जैसे पहाड़ों पर गहराती है रात

जैसे–जैसे पहाड़ों पर गहराती है रात
और बढ़ती जाती है निस्तब्धता
झींगुरों के स्वर तेज–से–तेज
होते जाते हैं
इस नीम अँधेरे में भी
कुछ ऐसी जगहें हैं जहाँ
पूरी तन्मयता के साथ
सुगबुगा रही है ज़िन्दगी
किसी चिड़िया के डैने तले
सुरक्षित अंडे को बड़ी
हसरत से ताक रहा है आसमान
इस आशा के साथ कि
कल एक और चिरौटा आएगा

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खेलने मेरी गोद में
इस समय गोंड के सपनों में
उतर रही होगी
महुवे के फूल की भीनी–भीनी गंध
बच्चे दौड़ रहे होंगे
नींद में रंग–बिरंगी
तितलियों के पीछे

भोर होते–होते धरती
बढ़ चुकी होगी
हज़ारों कोस।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अवधी

☯

यह पहली बार मेरी जबान पर
आई थी माई के दूध की तरह
इसके ही इर्द–गिर्द मड़राती है मेरी संवेदना
यह वह बोली है जिसमें
सबसे पहले मैंने किसी से कहा
कि मैं तुझे प्यार करता हूँ
इसके प्राण बसते हैं
बिरहा, कजरी और नकटा में
आल्हा और चैती में तो
सुनते ही बनता है इसका
ओज और ठसक
जायसी, तुलसी, तिरलोचन की
बानी है यह
यह उनकी है जिनका
सुख–दुःख सना है इसमें
धधक रही है जिनकी छाती
कुम्हार के आंवा की तरह
जिसमें पक रहे है
यहाँ की माटी के
कच्चे बर्तन
कल के लिये।

☯

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विवाह के पूर्व

लीपा जा रहा है आँगन
पोती जा रही हैं दीवारें
निकाला जा रहा है
कोठार से अनाज
कसी जा रही है खटियों
की ढीली ओरदावनें
छिड़की जा रही हैं
नेवता की पातियों पर हल्दी
मठमंगरे की माटी लिये
तालाब से गाती आ रही हैं सधवायें
मटके बैठ गये हैं
घिनौचियों पर

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टिकवा कर हल्दी की टिपकियाँ
मड़वे के लिये
आ गये हैं हरे बाँस
कहीं घर के एक कोने
बैठी है वह
कुछ डरी कुछ सहमी
चुहल करती
सहेलियों के बीच।
बैठका में दाई बाबा से अरझी है
नातिन की लगन धरी जा चुकी है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हम का बूझें

हम का बूझें
तुम्हरी ज़बान मालिक
हम ठहरे गँवई गँवर गट्ट
चार बिस्वा ज़मीन
सोख गई हमार लोहू
सिराय गई जिनगी
कीचा कांदौ के बीच
बुजरुग बेसाह गये थे दरिद्दर
सो आज तक बिराजे हैं महराज
बहुत जुगुत किया
एक न फली
एक न फली मालिक
वही काठ का घोड़ा
माटी की लगाम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दरी का दर ठम्मकठाम
जहाँ के तहाँ रह गये मालिक ई गाँव,
ई गाँव छोड़ के
कहाँ जायेंगे मालिक
ई की माटी में बसीकरन है
बसीकरन है, मालिक
खींच लायेगी हज़ार कोस से
अब तो यही हमार सरग है
यही है हमार नरक
ईका छोड़के कहाँ जायेंगे मालिक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भट्ठहा

☯

दौगरा बरस कर जा चुका है
अब ये घर लौटने की तैयारी में हैं
ईंट के भट्ठों पर काम करते हैं
भट्ठहा हैं ये
आपको अब नहीं मिलेगा
इनके चेहरों पर भट्ठे की आँच
और जेठ की धूप का असर
घर लौटनें की हलबुली झलकेगी
घर लौटते में रुकेंगे किसी
घने बाग़ में
उतार कर मैले कुचैले
पहनेंगे लक्कदक्क कपड़े
बालों में चुपड़ेंगे महकऊआ तेल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

टेयेंगे जुल्फी
छैल चिकनिया बनकर पहुँचेंगे गाँव
परदेश कमाकर लौटे हैं
पूरा घर हाथों–हाथ लेगा इन्हें
ये यहाँ मिलेंगे जात–बिरादरी से
अपने लगाये पेड़ों से, जानवरों से
और उनसे जो भरे आँगन में
सबकी निगाहों से बचकर
कनखियों से ताक रही होंगी इन्हें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम आओ तो

यहाँ भी भूख है, प्यास है
छद्म सहानुभूति की आग में
झुलसा हुआ मन है
फिर भी तुम
आना चाहती हो तो आओ
हम अपनी कुचली संवेदना
और खंडित विश्वास पर
बातें करेंगे
अभी नहीं भूला है मुझे
अपना मनपसंद रंग
तुम्हें भी न बिसरे होंगे सपने
तुम आओ तो एक बार फिर
हम सपनों और रंगों की
दुनिया में खो जायें।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

ये वहीं पर गा रही हैं

यह मनमनाती दुपहरिया
अगिया बैताल मौसम
ऐसे में भी
ढोलक की टनक के साथ–साथ
उठता नारीस्वर
"ठाढ़ी सिया पछताएँ
लव कुश वन मा भये"
कैसा भी मौसम हो
इन्हें तो बस अवसर की तलाश रहती है
और ये जुर–बटुर कर देने लगती हैं
अपने दुःखों को स्वर
सिया के दुःख में बोलता है
इनका भी दुःख
अपनी ही रची दुनिया में तिरस्कृत
अपने ही ज़वान होते बेटे से
बात करते थरथराती ये
जहाँ इनके तेज बोलने पर भी पाबंदी है
ये वहीं पर गा रही हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अब भी होंगे बच्चे

☯

जब हम कुछ भी नहीं थे
तब होते थे मचानों के बीचों–बीच
तेज–तेज घुमाते गुफना
ज़ोर–ज़ोर चिल्लाते हड़ा–हड़ा
रखाते थे चाँदी–सी चमकती
ज्वार की सफेद बालें
बात–बात में हो जाती होड़
फेंकते थे ढेले
कुड़िया तालाब के पार
आज भी स्मृतियों में शेष है
कितने ही पक्षियों के नाम व रंग
वह समय था जब
हमारे साथ कुछ दूर दौड़कर
हाँफ जाती थी हवाएँ
शाम घर लौटते समय

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हमारे इंतज़ार में खड़े होते
अमरूदों से लदे पेड़
एक–एक डाल से था परिचय
हमारी किलकारियों से
फूट पड़ते थे उनमें कल्ले
आज इस तंग कमरे में पड़ा
सोच रहा हूँ
अब भी मचानों पर होंगे बच्चे
जोर–जोर चिल्लाते हुए
हड़ा–हड़ा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाँदा

☯

अभी बहुत कुछ है
इस शहर में
मानिक कुइँयाँ, छाबी तालाब
टुनटुनियाँ पहाड़
केन और
उसके गर्भ में शजर*
इन्हीं चीज़ों से जाना जायेगा यह शहर
मंदिर–मस्जिद के विवाद से नहीं
राजनीति के दाव–पेंच से नहीं
अद्भुत है इस शहर का
अपने लोगों से प्यार
लोग भी टूटकर
चाहते हैं इसे
इसे छोड़कर मद्रास में.
नहीं टिक पाते केदार
लौट–लौट आते हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जानने को इसका हाल
नये कवि लिखते हैं इस पर कविता
और निकल जाते हैं
रोजी की तलाश में
ये शहर है
बोड़े हलवाई, दुलीचंद मोची का
आज की कविता में
जीता है ये शहर
ये शहर जीता है
चमड़े पर उस्तरा टेते
पीरू मियाँ की आँखों में
अभी बहुत कुछ है
इस शहर में।

---

*शजर–केन में पाया जाने वाला एक मूल्यवान पत्थर जो केवल केन नदी में ही पाया जाता है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पाठा की बिटिया

गहरा साँवला रंग
पसीने से तर सुतवाँ शरीर
लकड़ी के गट्ठर के बोझ से
अकड़ी गर्दन
कहाँ रहती हो तुम
कोल गदहिया, बारामाफी, टिकरिया
कहाँ बेंचोगी लकड़ी
सतना, बाँदा, इलाहाबाद
क्या खरीदोगी
सेन्दुर, टिकुली, फीता
या आटा, तेल, नमक
घुप्प अँधेरे में
घर लौटती तुम

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितनी निरीह हो
इन गिद्धों भेड़ियों के बीच
तुम्हारे दुःखों को देखकर
खो गया है मेरी भाषा का ताप
गड्डमगड्ड हो गये हैं बिम्ब
पीछे हट रहे हैं शब्द
इस अधूरी कविता के लिये
मुझे माफ करना
पाठा* की बिटिया।

*पाठा– बुंदेलखण्ड के बाँदा जिले का पठारी भाग।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कोरियों का डेरा

अब यहाँ नहीं रहते वे
उनके अधढहे मकान
खोदे हुये कुएँ
जिनमें अब भी है लबालब पानी
लगाये हुये अमरूदों के वृक्ष
जो आज भी समय पर फलते–फूलते हैं
सब कुछ छोड़कर चले गये
आये दिन दस्यु दलों का हाँका
रोती कलपती औरतें
अपनी ही माँ–बहनों पर होते
बलात्कार के साक्षात गवाह
मासूम बच्चे
आतंक और अपमान से
टूटकर चले गये वे
कोई नहीं जानता कहाँ गये
किस महानगर की डाढ़ में समा गये
पर भूमि का यह वीरान टुकड़ा–शेष
जिससे आज भी जुड़ा है उनका नाम–
कोरियों का डेरा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तीजनबाई

तीजन हो गयी है, छत्तीसगढ़
इसके स्वरों से फूट रही है–
छत्तीसगढ़ी धान की खुशबू
इसकी चाल में है
नाच और गम्मत का जोश
युगों से पंडवानी सुनता आ रहा
छत्तीसगढ़ भी
चकित है सुनकर बिटिया की ललकार
छत्तीसगढ़ की पथरीली छाती पर
तनकर खड़ी हो गयी है
शाल के वृक्ष की तरह
महाजन के यहाँ बर्तन मलती
हाट में सर पर लकड़ी का
गट्ठर लिये खड़ी
ठेकेदारों की निगाहों से
बचकर महुआ बीनती
टूरियों तक पहुँच रही है
उसकी हाँक

तीजन हो गई है छत्तीसगढ़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बेनीमाधव

कब से धड़क रहे हो
इस शहर के सीने में
बेनीमाधव
कुछ याद है तुम्हें ?
कब छोड़ा था गाँव
कौन–सा मौसम था
ठंडी, गरमी या बसिकाला
कुछ तो याद होगा ही
वो कौन–सा दिन था
जब तुम डीह के
ग्राम देवता को
सौंपकर बूढ़े माँ–बाप
निकल पड़े थे
तब से आज तक

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फटी बंडी, उटंग धोती
पहने तुम
खींच रहे हो ठेलागाड़ी
जानते हो कब से साधे हो
इस शहर को अपने बूढ़े हाड़ों पर
इसके फैलाव के साथ–साथ
सिकुड़ता जा रहा है
तुम्हारा चेहरा
देखा है कभी आइना
क्या करोगे देखकर भी
आइनों की दुनिया से दूर हो
इसीलिये बचे भी हो
बेनीमाधव
हथेली पर खैनी ठोंकते तुम
इस पल–पल केंचुल
बदलते शहर के लिये
हमेशा ही एक चुनौती
रहोगे, बेनीमाधव।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लड़कियाँ, लड़कियाँ होने से घबराती नहीं

गर्भ में भ्रूण हत्या का डर
जनमते ही मारे जाने का डर
सयानी होते ही
कोठे पर बेंचे जाने,
और ब्याहते ही
आग में झोंके जाने की आशंका
वृद्धा होते ही
असुरक्षा के दंश
आह !
कितने संकटों को पार करके भी
लड़कियाँ, लड़कियाँ होने से
घबराती नहीं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

धरती जानती है

बादल गा रहे हैं
धरती सुन रही है
सुन रहा है लक्खी
छाते हुये छान

मलकिन बौंका रही है
पुवाल
लक्खी गाँस रहा है
लक्खी भी गायेगा
छा चुकने के बाद

अक्सर ही
धरती और आकाश के बीच
आ जाता है लक्खी
जब सूख चुके होते हैं
बादलों के कोष
तब भी हल बाखर
खेतों पर लिए
धरती की आस
बँधाये रखता है लक्खी
धरती जानती है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लक्खी निकाल लायेगा
पानी
तोड़ कर पत्ताल
चार फुट का यह
भदेस–सा लक्खी
जिसके आगे
हार जाते हैं
बादल
झुक जाता है आकाश
लक्खी
चलना जानता है
बिजलियों के बीच
गाते हुये
जैसे गा रहे हैं बादल।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आदमी और पहाड़

यहाँ आदमी और पहाड़
साथ–साथ रहते हैं
यहाँ पहाड़ का मतलब आदमी
और आदमी का मतलब पहाड़ है
यहाँ नहीं चलता
पहाड़–सी ज़िन्दगी वाला मुहावरा
यहाँ पहाड़ ही ज़िन्दगी है
बाँस और चीड़ के वनों में निर्भय फिरती
ये परियों से चेहरों वाली लड़कियाँ
इन्हें मिला है पितामह पहाड़ का अभयदान
पहाड़ ही है घर और

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहाड़ ही है खेत
जब धरती को फाड़ बाहर आने को
कसमसाती है आलू की तैयार फसल
और सोने के बोझ से
झुकने–झुकने को होती है
मक्के की बालें.
तब पहाड़ी बुरुंश की तरह
खिल उठते हैं लोगों के चेहरे
और अपने पहाड़ होने के गौरव में
कुछ और ऊँचे हो जाते हैं पहाड़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह दुःख तो टिकेगा ही

यह दुःख तो टिकेगा ही दिनों तक
पिता की उदास आँखों में,
पत्नी के खामोश चेहरे पर
छाया रहेगा भेड़िये के डर–सा
बच्चों की चहचहाहट पर
मुरझा जायेंगे अड़हुल के फूल

यह दुःख
टहलेगा घर का एक–एक कोना
बजायेगा स्मृतियों की साँकल
एक–एक कर खुलेंगे
अतीत के किंवाड़
चूल्हे पर चढ़ी खाली बटुई की तरह
धिकने लगेगा सारा घर
खूँटी पर टँगे ये उसके कपड़े भी
जिनमें अभी बाकी है
उसके होने का एहसास।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दादा नहीं जानते हैं

☯

दादा नहीं जानते हैं
कहाँ है रिओ, और
क्या होता है पृथ्वी–सम्मेलन
जब कारखानों में छिड़ चुकी थी
धुआँ उगलने की होड़
धन–कुबेर ताक रहे थे
तिजोरियों की ओर
मेरे दादा भी छेड़े हुये थे
एक खामोश मुहिम
इन सबके खिलाफ
दशकों पूर्व
कंधे पर बँहगी उठाये
सींच रहे थे पौधों की
एक–एक जड़
शामिल रहे पूरी उम्र

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उनके विकास के क्रम में
देखते रहे पौधों का
दरख्तों में तब्दील होना
सुनते रहे उनकी....
बादलों से सरगोशियाँ
आज जब देख रहा हूँ
दूरदर्शन पर....
चमचमाती गाड़ियों में
दमकते सूट पहने राजप्रमुख
सुन रहा हूँ उनके प्रलाप
मुझे याद आ रही है
दादा की घुटने तक धोती
पसीने से सनी पीठ
मिचमिचाती आँखें
जो देख रहीं थीं
पूरे–के–पूरे कालखंड के पार।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

चौथ का चाँद

दिन भर का
निर्जला उपवास
घर भर का टहलबूत
पूरी बखरी में
फिरिहरी की तरह नाचतीं तुम
क्लांत चेहरे पर ये
थकी–थकी–सी मुस्कान
जैसे हलकोर दिया गया है
काई लगा जल
दुनिया भर के संकटों से
मुझे बचाये रखने का
ये तुम्हारा मासूम प्रयास
एकटक आकाश पर इंतज़ार में
टिकी आँखें
पर जाने कहाँ बिलम गया है
ये मुआ चौथ का चाँद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिलहाल तो ये पतंगें हैं

मटमैला–मटमैला कुछ नीला–सा
आसमान
कहीं–कहीं पर बादलों के
धुँधले टुकड़े
इनके बीच उड़ती ये इक्की–दुक्की पतंगें
इस धरती और आकाश के बीच
कहीं कुछ तो है
जहाँ ठहर सकती है नज़र
मैं इस समय आप से
अनन्त के रहस्यों की बात
नहीं करना चाहता हूँ
न ही उसमें घूम रही
सेटलाइटों के बारे में
फिलहाल तो ये पतंगें हैं
बच्चों की उंगलियों पर सधी

जो सारे अंतरिक्ष की
उदासी पर भारी हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

भरथरी गायक

जानें कहाँ–कहाँ से भटकते–भटकते
आ जाते हैं ये भरथरी गायक
कांधे पर अघारी
हाथ में चिकारा थामे
हमारे अच्छे दिनों की तरह ही ये
देर तक टिकते नहीं
पर जितनी देर भी रुकते हैं
झाँक जाते हैं
आत्मा की गहराइयों तक
घुमन्तू–फिरन्तू ये
जब टेरते हैं चिकारे पर
रानी पिंगला का दुख
सब काम छोड़
दीवारों की ओट से
चिपक जाती हैं स्त्रियाँ

यह वही समय होता है
जब आप सुन सकते हैं
समूची सृष्टि का विलाप।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

स्वागत है

☯

स्वागत है तुम्हारे आने का
ग्रहण करो
अपने हिस्से की
धूप, हवा और पानी
क्या हुआ जो तुम
फुटपाथ पर पैदा हुये हो
यहाँ धूप ज़्यादा सेंकेगी तुम्हें
ज़्यादा ही सहलायेगी हवा
सभी कुछ पहचानने की
कोशिश में टिमटिमाती आँखें
असंख्य जिज्ञासाओं उत्कंठाओं के साथ-साथ
बढ़ो तुम
ये मौसम तो कड़ी धूप का है
पर छाँव उनकी भर नहीं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

जो टाँगे पसारे ऊँघ रहे हैं
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
इस टोकरी से निकलकर
समस्त सृष्टि तक हो
तुम्हारा विस्तार
बे–मकसद नहीं है तुम्हारा आना
बे–मकसद नहीं निकलता सूरज
बे–मकसद नहीं चलती हवायें
तुम आये हो
एक जीवन के साथ
स्वागत है, स्वागत है
उन सम्भावनाओं का
जो पल रही हैं
तुम्हारे भीतर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नहीं मेरे बेटे नहीं

मेरे बेटे अगर ये सारा का सारा आकाश
मैं तुम्हें दे भी दूँ
समेट कर छतरी की तरह
बोलो क्या करोगे ?
सम्हाल पाओगे ऐसी छतरी ?
जो तुम्हारे खोलते ही ढाँक ले दुनिया
और ये आकाश जिस पर तमाम लोगों का हक है
तुम्हारे कमरे के किसी कोने में पड़ा हो
और वो गौरैया का बच्चा जिसने सीखा है
उड़ना अभी–अभी....
बैठा रहे तुम्हारे इंतज़ार में
नहीं मेरे बेटे नहीं तुम्हें तो
खुद भी चाहिये एक खुला आकाश
ठीक गौरैया के बच्चे की तरह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विरासत

☯

माँ सौंप गई एक
बिन ब्याही बहन
टूटे हुये पिता
अधबना मकान
लंगड़े लूले सपनें
अपनी धुंधली होती यादें
और कुछ आशीर्वाद।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

गवनहार आजी

☯

पूरे बारह गाँव में
आजी जैसी गवनहार नहीं थी
माँ का भी नाम एक दो गाँव तक था
बड़ी बूढ़ियाँ कहती थीं कि
मँझली को ही अपना गला
सौंपकर गईं थीं आजी
पर एक फर्क था
माँ और आजी के बीच
आजी के जो गीतों में था
वह उनके जीवन में भी था
माँ के जो गीतों में था
वह उनके जीवन से धीरे–धीरे
छिटक रहा था
उस सबके लिये जीवन भर
मोह बना रहा उनमें
जाँत नहीं रह गये थे पर
जतसर में तुरंत पिसे
गेहूँ की महक बनी रही

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

एक भी रंगरेज नहीं बचे थे
पर "केसर रंग धोती रंगाव मोरे राजा"
का आग्रह बना रहा
कुएँ कूड़े–दानों में तब्दील हो गये थे
पर सोने की गगरी और रेशम की डोरी
के बिना एक भी सोहर पूरा नहीं हुआ
बीता–बीता ज़मीन बँट चुकी थी
भाइयों–भाइयों के रिश्तों में खटास आ गई थी
फिर भी जेठ से अपनी झुलनी के लिये
ज़मीन बेंच देने की टेक नहीं गई
माँ के गीतों को सुनकर लगता था

जैसे कोई तेजी से सरकती गीली रस्सी को
भीगे हाथों से पकड़ने की कोशिश कर रहा है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

माँ

माँ बाँचती थी रामायण
सींचती थी तुलसी
पूरती थी बाती
दिये के लिए

शाम ढलने के
पहले ही
उजालों के देश से
आई थी माँ और
चमकती रही हमारे बीच
अक्षय ज्योति शिखा–सी
नीम की गझिन
छाया थी माँ
जिसके सनेह के फूल
झरते ही रहे हमारे ऊपर

सदानीरा नदी थी माँ
जो बहती रही
पितृ–संस्कृति के
पहाड़ों के बीच...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इंतज़ार

खूब अर्रा तोड़
गिरा पानी
भर गये गड़हा–गड़ही, तालाब
मेढकों ने जी भर गया
टर्र–टों का गीत
गले–गले तक बूड़ कर नहाये धान
पर किसी के इंतज़ार में
घर के कोने में
पड़ी रह गई छतरी
पैरों की आहट
जोहता ही रह गया
बरसाती जूता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पिता

कल्प वृक्ष नहीं थे पिता
ऊसर में खड़े बबुर थे पिता
अम्ल और छार पीकर ज़िन्दा रहे
पिता थे तो ज़िंदा था मेरे भीतर
बच्चा होने का अहसास

पहाड़ी तोते की तरह
फुर्र से नहीं उड़ गये पिता
बूढ़े बाज की तरह
हवा के खिलाफ
पंख फड़फड़ाते उड़ते चले गए हैं पिता।

माघ–पूस के कठिन जाड़े में
अलाव की आँच थे पिता

कल्प वृक्ष नहीं थे पिता।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जरूर बाँचेगा समय

☯

ये तुम क्या गा रहे हो मित्र
घने कोहरे में सूरज का एहसास होता है
मृगशावक की उन्मुक्त कुलाचों से
ये स्वर सहज ही नकारे जा रहे हैं,
हर तरफ बंदिशें
हवाओं में तैरते ये शिलालेख
जिन्हें कभी जरूर बाँचेगा समय
गर्दिश के दिनों में
शाखों पर रखे ये चील के घोंसले
जिसमें दफ़्न है,
कत्ल की गई उड़ान की आकांक्षाओं वाले
पखेरूओं के शव
ये अमावस की काली चादर
जिस पर अभी नहीं उभर सके हैं
रोशनी के चमकते अक्षर

दम घोंटू चुप्पी की क्यारी में भी
तुम रोप रहे हो
कौन से शब्दों के ये बिरवे।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तानसेन

तानपुरे के तारों को ढीला कर
सुरों को विश्राम दे
लाल पत्थरों के नीचे
फटी चादर ओढ़े
सो रहा है एक गायक
दरबार उठ चुका है
और लोग जा चुके हैं
अब यहाँ पर किसी के होने का
कोई निशान शेष नहीं है
सिवा इन बुझे दियों के
जिन्हें आज भी
दीपक राग का इंतज़ार है
गौस साहब की मजार से
मन्नत माँग कर लौटते लोग
इधर भी देख लेते हैं उचटती निगाह से
हर साल इकट्ठा होते है कुछ लोग
रस्म अदायगी के लिये

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर
इधर मुँह नहीं करते
हाँ बिना नांगा हर अषाढ़ में
इकट्ठे हो–हो कर बादल
झूम–झूम कर गाते हैं
मेघ–मल्हार
और अश्रुपूरित नेत्रों से
विदा लेते हैं
वे अपने गायक के प्रति
इतने कृतघ्न हो भी
कहाँ सकते हैं।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जब भी देखता हूँ

जब भी देखता हूँ
तुम समय के क्रोशिए लिये
विश्वास के धागे से
बुनती ही रहती हो
भविष्य के सपने
टाँकती ही रहती हो
मनपसंद फूल
सोचता हूँ कितना अटल है
तुम्हारा विश्वास

इस अनिश्चित भविष्य पर
वर्तमान के त्रास को
नकारते हुए भी
तुम डालती ही जा रही हो
भविष्य के नये फंदे
समय के क्रोशिए पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम इतना क्यों सोचते हो पीरू

पीरू मियाँ कतरनी से
भी ज़्यादा तेज है
तुम्हारी जुबान
उस्तरे से भी
तीखे हैं
तुम्हारे शब्द।
इस शहर और
दुनिया को लेकर
तुम इतना क्यों
परेशान रहते हो पीरू
क्या होगा तुम्हारे सोचने से
वर्षों पुरानी काठ की
यह कुर्सी भी तो आज तक
नहीं बदल पाये तुम
झुर्रियों में तब्दील होता
यह तुम्हारा चेहरा
एक पूरा–का–पूरा
शहर हो रहा है।

तुम इतना क्यों सोचते हो पीरू।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

यह सुख किसका है

यह सुख किसका है
कि समा नहीं रहा है मेरे भीतर
साथ यह किसका है
कि उड़ने–उड़ने को चाहता है मन
धीरज यह किसका है कि
इतने दुःखों में भी नहीं दरकती है
मेरी छाती
साहस यह किसका है
कि मैंने टूटी–सी नाव पर बैठकर
ललकार दिया है सागर को
आग यह किसकी है
कि पिघलने लगी है मेरे भीतर की
बर्फ़।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नानी

जाने कब के उजड़ गये कजरी वन
उड़ गये मुरइला–मुरइली
पर नानी के नकटा और कजरी में
आज भी हरियर हैं वन
अब भी बोलती है मुरइली
सुरों की लचक में उसके
बुढ़ाय गई नानी
गिनते–गिनते
पुन्नवासी–अमावस
मनाते–मनाते
नातिनों–नातियों की खैर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कितने पहाड़ों को पार करते–करते
झुकी होगी उनकी कमर
और झुके–झुके ही करना है अभी
कितने पहाड़ पार
अबके शिवरात में
तुम फिर गाना नानी
भोले बाबा का बियाह
और जुड़ायेंगे हम
निरख–निरख
तुम्हारा पोपला मुँह।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कम नहीं होते तिरासी साल

☯

कम नहीं होते तिरासी साल
इतने सालों में तो
तक्सीम हो गये कितने मुलूक
धरासायी हो गये कितने पुरोधा
कितने ही महाबलियों ने
कर दिये संधि–पत्रों पर हस्ताक्षर
तुम चले तो अपनी चाल
न ही कहीं पहुँचने की हड़बड़ी
न ही मज़िल के प्रति कोई नैराश्य
कमसिन से चले तुम
गर्रा नाला की गति
मरूवा काबर की महक के साथ
केन के साथ–साथ
बहता रहा तुम्हारी चेतना का प्रवाह
तुम लगे होगे किसी को
कालिंजर से विशाल

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पर मैंने जब भी पाया
एक फूल के न खिलने से उदास
मूक नीम में तलाशते वनस्पतीय बोध
अजब हो गजब हो तुम
मेरे पुरखा पुरनियाँ
इस कच्चे मकान में
काठ की कुर्सी पर बैठे
कहो तो क्या रच रहे हो
इन दिनों केदार।[1]

---

1. बुजुर्ग कवि केदारनाथ अग्रवाल के प्रति।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बग्गड़

☯

जैसे सोंधाता है
नई गगरी का पानी
दोहनी में पका दूध
भार में भूँजा चना सोंघाता है
मुझे वैसे ही सोंधाती है
तुम्हारी हँसी बग्गड़
जब हँसते हो तो लगता है
जैसे सूने ताल को
एकाएक गह–गहाकर ता लिया है
पुरइन के हरे पातों ने
और जब रह–रह कर

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

छाँटते हो मुश्की तो महसूस होता है जैसे
धीरे–धीरे भिसक रहा है
देशी ककरी का फूट
गाँव, सेवार, चौगिर्दा
चौकश फिरते तुम
तुम हो हमारे घुमन्तू ठइहांर, भुइहार

जितना जरूरी है कोठार में
अनाज का बचे रहना
उतना ही जरूरी है
तुम्हारी हँसी का बचे रहना बग्गड़।

ठइहांर, भुइहार (ग्राम देवता)।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लेनिन तुम फटा कोट नहीं हो

लेनिन तुम फटा कोट नहीं हो
जिसको उतार फेंके कोई भी
न ही तुम सिर्फ एक नाम हो
जिसे कोई धूर्त इतिहासकार
पन्नों से उड़ा दे
तुम तो ऊर्जा के
वह अप्रतिम स्रोत हो
जिसके करीब
फिर–फिर आना होगा
ठंड से व्याकुल
अकड़े लोगों को
जहाँ कहीं भी बेहतर कल के लिए
अपना आज होम कर रहे होंगे
मेहनतकश
उनकी टूटती रगों पर
नहीं होगा कोई
रखने वाला हाथ

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम उस हर जगह पर होगे लेनिन.
लेनिन तुम लेनिन न होते तो क्या होते
तुम जरूर होते ध्रुवतारे से चमकते
नक्षत्र या फिर
मेरी दादी की कहानी के नायक
जिसके एक ही घूंसे से
ख़ून उगल देता था
आतताई राक्षस
अभी वोल्गा में
अथाह जल है
जिसमें डूब सकता है
पूरा–का–पूरा अमरीका
मास्को की दीवारों से
भले ही कोई मिटा दे
तुम्हारा नाम
हम लिख देंगे इसे
खाली पड़े आकाश के सीने पर।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

उदास टहनियों को हरे पत्ते सौंपते हुए

उसके पास ऐसा कुछ भी नहीं था
जिस पर ऐंड़ कर चलता
या छाती फुलाकर बातें करता
तमाम वादों–प्रतिवादों
बहस–मुबाहिसों के बीच
बस वह अपने होने का पक्का सबूत था
उसे समय गुजारने की मुश्किलें नहीं थीं
न ही उसे धरती के कहीं खिसक जाने
या अचानक एक दिन न रहने जैसी
कोई भी चिंता
उसके चारों ओर फैले पड़े थे
मनपसंद रंग
जब चाहता उनमें खो जाता
तमाम हलचलों से दूर
उसके पास एक परम्परा थी
पुश्तैनी भूख थी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सनातन प्यास थी
वह चल रहा था और
अपने गुजरने की खबर
उसे खुद भी नहीं थी
वह चल रहा था
नदी–नाले, पहाड़ों के साथ
गाँव की पोखर
कँदई भरे पानी में
बूड़ता–उतराता
और इस दुनिया से बेखबर
उसे मालूम नहीं था
उसके बारे में क्या–क्या सोचते हैं लोग
उसे यह भी पता नहीं था कि
उस पर लिखी जा रही हैं
मोटी–मोटी पोथियाँ
पढ़ी जा रही हैं कविताएँ
कितनी जल्दी में हैं
उसे बदल डालने को लोग
उसका चिथड़ा कुर्ता
बेतरतीब बढ़ी दाढ़ी
धूल से अटी देह
कितनी खटक रही है
इस दुनिया की निगाह में
उसको यह ज्ञात नहीं था
कि उसके नाम पर नारे गढ़े जा रहे हैं
सिर्फ कभी–कभार आसपास से गुजरती
भीड़ देखता और खिसक कर किनारे हो जाता
वह दर्शन नहीं जानता था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

विज्ञान नहीं जानता था
इतिहास से लेकर भूगोल तक
अँटा पड़ा था वह
लेकिन बित्ता भर ज़मीन को भी मोहताज
वह अखबार नहीं पढ़ सकता था
घड़ी में समय नहीं देख सकता था
पर जाने कैसे हवा का रुख
भाँप जाता पलक झपकते
बिना मौसम–विज्ञान की सहायता के ही
वह बादलों को देखकर
बता सकता था उनका मिज़ाज
वह इस धरती का
सबसे भरोसेमंद मित्र था
पूरी उन्मुक्तता के साथ
उसके एक कोने से दूसरे तक विचरता
उसने संकट में कालिंजर गढ़ा
तो फुरसत में खजुराहो
मैदानों में अपनी रेवड़ों के साथ
मुस्तैद घूमता
पर एक दिन ये भी हुआ
कि वह कचहरी में
पेशकार के आगे भौंचक खड़ा था
हाकिम से घिघिया रहा था
वह बिगड़ैल साँड को
सींग पकड़कर बैठा सकता था
अकेले ही बाघ से लड़ सकता था
पर वकीलों के कुतर्क के आगे निरीह
कुछ लोगों के लिये वह वोट था

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जाति था
धर्म था
कवियों के लिये एक दमदार कथ्य
नेताओं की सीढ़ी
अफसरों का शिकारगाह
पर वह चूल्हे की आग भी था
जिसकी रोशनी में दिपता था घरैतिन का चेहरा
वह बच्चों का पिता था
अपने खेतों, पेड़ों और जानवरों का रखवाला
पत्तों को छोड़ चुके
नंगे खड़े पेड़ों के बीच
वह तो बसंत की तरह था
जो मुतमइन था
उदास टहनियों को
हरे पत्ते सौंपते हुए।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बिसात बिछी है

बिसात बिछी है
हाथी, घोड़ा, ऊँट सब
चाक–चौबंद
निशाने पर वज़ीर
साधे है कमान
और तुम्हें इन
निहत्थे पैदलों पर
इतना गुमान
आने दो एकाध मोड़
फिर गिनना कितने रह गये
तुम्हारे विश्वास के
कितने कँगूरे ढह गये
समय के गर्भ में
सच ही नहीं झूठ भी पलता है
आदमी आग से ही नहीं
बर्फ़ से भी जलता है

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सच कहने की साँसत
अगर दोस्तों पर डालोगे
तो फिर अपने लिये ही
नाग पालोगे
भाषा नये अर्थ ग्रहण कर रही है
विद्वान वक्त की चाल भाँप रहे हैं
आप हैं कि वही
देशी बटखरा–तराजू लिये
अब तक माप रहे हैं।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खैराड़ा जंक्शन का गेट मैन

☯

आस–पास फूले पलाश के बीच
खाकी धूसर वर्दी पहने
सर पर लाल पगड़ी बाँधे
जैसे कोई पलाश का पेड़ ही
चलकर आ गया है
टेलीफोन की घंटी पर दौड़ रहा है
लीवर गिरा रहा है
प्रतीक्षारत वाहन चालकों से उलझ रहा है
बायें, हाथ में लाल, हरी झंडी थामें
दाहिने हाथ को हिला–हिलाकर
गुजरती कानपुर पैसेन्जर से
बच्चों का अभिवादन स्वीकार कर रहा है
सब कुछ ठीक–ठाक गुजर जानें पर
पटरी पर बैठकर
सूँट रहा है बीड़ी यह
बूढ़ा ठिगना
लाल पगड़ी वाला पलाश।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

आप व्यर्थ परेशान हैं श्रीमन् !

आप व्यर्थ परेशान हैं श्रीमन्
दो–चार हिचकोले खाकर
धरती सम्हल ही जायेगी
लोग खड़े ही कर लेंगे
सर छुपाने को अपने मकान
बर्फ़–बारी क्या
समय की दाढ़ से
निकल आयेंगे साबुत
ज़िन्दगी को देंगे आवाज़
किसी चरवाहे की तरह
और वह रँभाती दौड़ी चली आयेगी
आप व्यर्थ परेशान हैं श्रीमन् !
विपत्तियों की टकसाल में
ढले हैं ये
कभी नहीं जायेगी इनकी खनक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

संग्रहालय

(ग्वालियर संग्रहालय देखकर)

☯

इस संग्रहालय में है
पाँच सौ चालिस किलो
सोने से सजा दरबार हाल
कुछ बेशकीमती
झाड़–फानूस
बहुमूल्य धातुओं में ढले
राजा–रानी के चित्र
सोने चाँदी से मढ़ी
जानवरों की सीगें
और हैं कुछ तलवारें भी
जो निर्णायक मौकों पर
म्यानों में ही रखी रहीं
चमचमाती दीवारों पर अचानक
उभर आते हैं बेबस चेहरे

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नक्काशीदार आबनूसी
अलमारियों के बीच से
झाँक रहीं हैं
कारीगरों की क़ैद आत्मायें
रथों में जुते घोड़े
ढो रहे हैं, अपने युग का शाप
उधड़ती दीवारों पर
पीठ टिकाये खाँस रहा है
बूढ़ा प्रहरी
जिसकी बंद होती
आँखों से
जाने–जाने को है चमक।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

पहली बार लगा

बहुत दिनों से नहीं लिखी कोई कविता
पढ़ी भी नहीं कोई किताब
सोचता रहा कथरी के चीलरों
के बारे में
सड़कों पर घूम रहे
पागल कुत्तों के बारे में
मैले के ढेर पर पिले
सुअरों के बारे में
न जाने क्या-क्या सोचता रहा मैं
देखता रहा बंद कमरों में
सन्न पड़े बच्चों को
पहली बार लगा
सन्नाटा भूख से भी
ख़तरनाक है
लाशों से पटी सड़कें
इतिहास की गठरी

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

सर पर उठाये
उल्टी दिशा में भागते लोग
एक पल तो लगा
हाँफ कर रुक जायेगी
ये धरती
गिर पड़ेगा आसमान
वे मालूम कर पाये हैं
या नहीं
अपने–अपने खुदाओं का पता
पर मैं उन्हें पहचान गया हूँ
जान गया हूँ उनके
ज़िन्दा रहने का रहस्य
जिन्होंने–असुरक्षित कर दी है
ये पूरी की पूरी धरती
मैदान में खेलते बच्चों
तक के लिये।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

खोजो उन हाथों को

☯

कम हो रहे हैं
धरती को सँवारने वाले हाथ
कवि कविताओं में चित्रकार चित्रों में फँसे हैं
आसमान के आइने में
ताक–ताक अपनी सूरत
जाने क्या बिसूर रही है धरती
जाने कहाँ बिला गये हैं
धरती को बचाने वाले हाथ
समय नहीं है अब
बोलने का ठकुर सोहाती
चारण गान का
डूबते पोत को किनारे से देखकर
संवेदित होने
छाती पीटने का समय नहीं है यह
उन हाथों को खोजो
खोजो उन हाथों को–
उनके बिना धरती न रहेगी धरती
न ही बच पायेगी ये सृष्टि।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

अनुबंध

☯

इतिहास के गर्त में
खो गईं कितनी भाषायें
मिट गईं कितनी संस्कृतियाँ
लुप्त हो गईं
कितने ही जीवों एवं वनस्पतियों
की पहचान
बचे रहे हम मनुष्य
हमने ऋचाएँ रचीं और
प्रकृति के गीत गाये
आयुर्वेद खोजा और खड़े हुये
रोग और मृत्यु के विरुद्ध
खिलाफ मौसम में भी
छछड़ते रहे हम
लिपटे रहे अपने
जिजीविषा के संबल से
सदा से एक अनुबंध
रहा है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इस सृष्टि से
हमारा

अनुबंध जो
धरती से पेड़ का है
फूल का रंग से
पक्षी का आकाश से।
और काया का प्राण से।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बूढ़े जब दे रहे थे सूर्य को अर्घ

जब लोग दहशत से
बंद कर रहे थे
अपनी खिड़की, दरवाजे
तब मैदान में खेलता बच्चा
उछाल देना चाहता था गेंद
आसमान तक
जब सब कोस रहे थे
मौसम के तीखेपन को
बुजुर्गों का रोपा
एक पौधा बढ़ रहा था
धीरे–धीरे
बंद कमरों में जब
छिड़ी थी गरमागर्म बहसें
तब एक झरना बेचैन था
बनने के लिये धारा
शिकारी जब साँस
रोक कर साध रहा था

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

निशाना Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तब डाल पर बैठे तोते
मिला रहे थे आपस में चोंच
लोग तब बीती
तारीखों का
दे रहे थे हवाला

तब एक पल के अंतराल में
गूंज रही थी
आने वाली सदी की धड़कन
बूढ़े जब दे रहे थे सूर्य को अर्घ
तब एक बच्चा
तैरा रहा था नदी में
काग़ज़ की नाव।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

और अमर हो जाऊँगा

मैं तुम्हारी भूख पर
कविता लिखूँगा
और कवि हो जाऊँगा
तुम्हारी मौत पर मर्सिये
गाऊँगा और
चर्चा में बना रहूँगा
तुम्हारे लिये....
काग़ज़ पर लड़ाइयाँ लड़ूँगा
और योद्धा होने के गुमान में
फूला फिरूँगा
तुम्हारी मजबूरियों में भी
क्रांति तलाशूँगा
और अमर हो जाऊँगा।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे

वे जो लम्बी यात्राओं से
थककर चूर हैं उनसे कहो
कि सो जायें और सपने देखें
वे जो अभी–अभी
निकलने का मंसूबा ही
बाँध रहे हैं
उनसे कहो कि
तुरंत निकल पड़ें
वे जो बंजर भूमि को
उपजाऊ बना रहे हैं
उनसे कहो कि
अपनी खुरदुरी हथेलियाँ
छिपायें नहीं
इनसे खूबसूरत इस दुनिया में
कुछ भी नहीं है

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

वे जो कारखानों में
जुटे हैं
उनसे कहो कि
निराश न हों
इस दुनिया में जो भी
अच्छा बचा है
सब उनकी बदौलत है
वे जो दुनिया में कहीं भी
आन्दोलनरत है
और अपने हक की लड़ाई
लड़ रहे हैं
उनसे कहो कि
फंदे सिर्फ़ उनका ही गला नहीं पहचानते
और वे जो कवि हैं
और कविता लिख रहे हैं
उनसे इसी दम कहो कि
कविता में ताप बनाये रखें
बरसों की जमी बर्फ़
इसी से पिघलेगी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

कब तक बचे रहेंगे

हम बच भी गये तो
कब तक बचे रहेंगे
उन लोगों के बिना
जो हमारी अनुभूतियों में
विश्वास की तरह जिंदा हैं
वे इस धरती के
सबसे बहादुर लोग थे
जो किसी जंग या मुहिम में नहीं
दूध और सब्जी बेंचते हुये मारे गये
बच्चों की भूख
खींच लायी थी उन्हें सड़कों पर
ज़िन्दगी जीने के जतन में
मारे गये
वे किस्सों कहानियों में नहीं
सरकारी आँकड़ों में नहीं
उन लोगों में बने रहेंगे
जो उनके बाद भी
जीने का प्रयास कर रहे हैं।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाँके

☯

फिर लिखा नदी ने
विनाश का एक और पृष्ठ
नहीं बचा पाया राधे
वर्षों का जुहाया
बिटिया के ब्याह का सामान
बह गई सबके सामने से
कपड़ों से भरी संदूक
देखता रह गया पूरा घर
टीलों पर चढ़े लोग
देखते रहे अपने ही
ढहते मकान, सुनते रहे
बीच धार से उठते

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बचाओ–बचाओ के आर्त स्वर
मारे गये वो जिनकी आँखों में
आकाश से कम कुछ भी नहीं था
जिनमें शेष था धरती का विश्वास

नहीं भागा तो बाँके अहीर
डटा रहा पूरे तीन दिन, तीन रात
अपने ढोर डांगरों के साथ
पूरे तीन दिन, तीन रात
बाँके से जूझकर लौट गई नदी।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बस इसी तरह

महानायकों के बीच
एक अदना-सा चरित्र
महाग्रंथों से
छूट गया कोई शब्द
चुप पड़ी झील में
एक कंकड़ की दखल
दीवार पर चित्र उकेरते
बच्चे के लापरवाह हाथों में
जैसे खड़िया का टुकड़ा
बस इसी तरह मैं
दुनिया में और
दुनिया मुझमें ज़िंदा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

फिर भी जाने क्यों

☯

इस समय शहर में
सब ठीक–ठाक है
दुकानें अटी पड़ी हैं
वस्तुओं से...
शेयरों के दाम
छू रहे हैं आसमान
पुलिस मुस्तैद है
चुस्त वर्दियों में
सड़कों को रौंदते
दौड़ रही हैं...
रंग–बिरंगी कारें
तारिकायें दिखा रही हैं

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE 2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दूरदर्शन पर....
अद्भुत चीज़ें
फिर भी जाने क्यों
हट नहीं रही है लोगों के
चेहरों से उदासी
सिमटता जा रहा है
उनका क़द....
बौने होते जा रहे हैं
उनके सपने....
फिर भी जाने क्यों।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

शाम ढलते ही

☯

मशालों को हाथों में थामे वो
जिस तेजी से आवाज़ लगा रहे हैं
वो उन्हें डुबो भी आयेंगे
उतनी ही तेजी से
आश्वासनों की गहरी ठंडी झील में
अँधेरा चाट लेगा किसी
तिलचट्टे की तरह दिये से
तेल की अंतिम बूँद तक
सुबह फिर कुछ लोग
इकट्ठा हो जायेंगे पढ़ने के लिये
मर्सिया दिये की मौत पर
फिर बाज़ार गर्म हो जायेंगे
आरोपों–प्रत्यारोपों के

दिन भर के लिये
शाम ढलते ही वे ओढ़ लेंगे
अँधेरे की काली चादर और.
दुबक जायेंगे अपने–अपने दड़बों में।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

बाज़ीगर

बाज़ीगर आ रहे हैं
अपनी–अपनी झोलियाँ में लिये
अनेक तरह के तिलिस्म
उनकी निगाह है तुम्हारी
सबसे सुंदर, सबसे प्यारी
चीज़ों पर/मसलन
तुम्हारी नदी पर, पेड़ों पर
फूलों पर और तुम्हारे
बच्चे की हँसी पर
उन्हें–ले जाएँगे वे
अँधेरे कुओं में
दिखायेंगे अजूबा चीज़ें और
कहेंगे इनके बिना तुम
कितने नाचीज़ हो
बाज़ीगर आ रहे हैं
जो तुम्हें खींच सकते हैं
अंधी अंतहीन वस्तु–दौड़ में

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

जहाँ नष्ट हो सकता है
तुम्हारा, पूरा का पूरा जीवन
जबकि तुम पढ़ सकते हो
एक सुंदर–सी कविता
लिख सकते हो मित्र को पत्र
सींच सकते हो गमले के फूल
बतिया सकते हो पत्नी से
खुली छत पर
बाज़ीगर आ रहे हैं
वे तुम्हें नहीं देंगे
पलभर की मोहलत
इन सब बातों के लिये।
उनकी निगाह है
तुम्हारी इन सभी चीज़ों पर।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

थियान आनमन हो या फिलिस्तीन

मित्र !
गोलियों से छलनी
तुम्हारे सीने के घाव अब कैसे हैं
मजबूर हम उन्हें सहला तक नहीं सकते
सीमा पार से आया एक बादल का टुकड़ा
अक्सर उदास,
काफी उदास रहता है
तुम्हारे गमलों में–
फूल तो अवश्य खिलते होंगे
हमें दिखती हैं साफ–
उनको पानी देती उदास बहनें
रक्त रंजित कमीज़
सीने से लगाये मातायें
हम देख रहे हैं
तुम पर होते अनवरत अत्याचार
तुम्हारी आँखों के जलते सूर्य
जो कभी ठंडे नहीं पड़े–
कभी अस्त नहीं हुये
हम तक भी पहुँची है,

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

तुम पर दौड़ाये गये घोड़ों की टाप
फौलादी सीनों पर तोपों की आवाज़
हमें मालूम है
तुम्हारी कुचली हुई मुट्ठियाँ
अभी तक भिंची हैं
सीने फिर बेचैन हैं– संगीनों के लिये
ये सड़क–
ये सड़क भी काफी उदास रहती है
इसने भी तर पाया है अपना सीना
तुम्हारे गर्म लहू से
जिस पर तुम गिरे थे लहराकर
थियान आनमन हो या फिलिस्तीन
यज्ञवेदियाँ बदलती रहेंगी
नरमेध होते रहेंगे
उस अंतिम बिन्दु के लिये
जो बिल्कुल ही साफ है
हमारी और तुम्हारी
निगाह में...।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नदी

☯

किनारे के पत्थर
पूछते हैं नदी से
किन ऊँचाइयों से आई हो
नदी नहीं करती बात
जड़ पत्थरों में
वह बढ़ लेती है
उनको ही काटकर आगे
उसकी आँखों में तो बसे हैं
प्यासे कछार, राह ताकते
बाजरे के खेत
नदी जो सहेजे रखना चाहती है
छोटी–छोटी खुशियाँ
हरा–भरा रखना चाहती है
अपना परिवेश
आसमान ने बदले हैं बार–बार
अपने रंग

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

नदी रही केवल नदी
शाम ढलते ही सो जाती है नदी
और जाग उठती है
चप्पू की पहली छपाक के साथ
जहाँ उसके स्वागत को तैयार मिलती है
बालू से भरी नावें
हँसता खेलता
वरुण पुत्रों का परिवार

रोज एक और सूरज को
जन्म देती है नदी
और हवा में तैरने लगते हैं रोशनी के पंख

नदी रोज आती है हमारे आँगन
दादी के घड़े के साथ–साथ
और सींच जाती है
छतनार लौकी की सूखी जड़ें
नदी जो नील कंठ हो गई है
सारे शहर का जहर पीती है

नदी कुछ नहीं कहती
सिर्फ बहती है।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हाट

बहुत दिनों बाद आज
गाँव की हाट में पहुँचा हूँ
वही ठठेरे मोची कुंजड़े
सब अपने अपने
श्रम और कौशल के साथ
उपस्थित हैं यहाँ
उड़ती धूल के बीच
अलमस्त घूमते सुपारी कतरते
खेनी ठोंकते
युवा कुंजरिन को देखकर
मुस्कियाते लोग
अपने अपने मतलब का
~~सौदा सुलुफ मतलब का~~
सौदा सुलुफ खरीदते
यह सब देखकर लग रहा है
अभी यहाँ बाज़ार
ज़रूरते नहीं तय कर रहा है।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

लावनी

लाऊग लग रहा है
चाउर राँधने वाले हाथ
रोप रहे हैं धान
घुटने–घुटने भर कीचड़ में
कछाँड़ बाँधे झुकी हैं ये एक कतार में
धानी खेतों के बीच
नीली, लाल, पीली धोतियाँ
रंगों का मेला मचा है यहाँ
झुके–झुके अकड़ गई है कमर
पर थम नहीं रही लावनी और कजरी
हवा में तैर रहा है
"हरी–हरी पतिया, बलम कलकतिया" का स्वर
जिनके कलकतिया बलम अभी नहीं लौटे हैं
साफ पढ़ा जा सकता कुछ चेहरों पर उनका दर्द

अभी–अभी ही बरस कर गए हैं
और फिर से ओनये.पड़ रहे है बादल
इस वक्त कुछ पलों के लिए भूल गई हैं ये
किसके खेतों पर किसके लिए रोप रही हैं धान
बस ये चाहती हैं झक्क उज्जर भात
घर भर की थाली में।

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

इन दिनों

चने को घुन खा रहा है
लोहे को खाये जा रहा है जंग
मित्र अब शिष्ट हो रहे हैं
पहले की तरह बेचैन नहीं दिखते
कविता की आत्मा से
जोंक की तरह चिपक गए हैं भांड़
हत्यारे राजघाट पर प्रायश्चित कर रहे हैं
सधे हुए मिरासियों की तरह
राजपथ पर दौड़ते–दौड़ते
इस बूढ़े घोड़े की घिस चुकी है नाल
इसकी टापों से रिस रहा है खून।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

घड़ा

अभी कुछ देर पहले ही
वह कचरे और
कंकड़ से सना मिट्टी का लोंदा था
पहली बार मिला है इसे
गति और कौशल का संयोग
उखड़ती साँसों और
बीड़ी के कसैले धुँये के बीच
आकार पा रहा है ये
धरती के ही रंग का यह
जब आंवा से पक कर निकलेगा
तब भोर के सूरज से कहेगा
देखो मेरा रंग तुम्हारे रंग से
कम चटख नहीं है

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

मुझे बनाने वाला तुम्हें बनाने वाले से
ज़्यादा हुनरमंद है
जब पहुँचेगा ये बाज़ार तो
टनक–टनक कर देगा
अपने खरे होने का सबूत
ये उनकी तरफ आँख भी नहीं करेगा
जिन्हें नहीं है इसकी जरूरत
और जिन्हें होगी इसकी जरूरत
उनके लिये गला डुबाकर भी
निकाल लायेगा पानी।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

हवाओं से कहो

☯

बादलों की कथरी
जगह–जगह से फटती जा रही है
मेरे खेत ठंड से काँप रहे हैं
दूर–दूर तक ठिठुरी पड़ी है हरियाली
हरियाली का ठिठुरना बिंब भर नहीं है
यह एक विपत्ति की सूचना है
जो धीरे–धीरे पहुँच रही है
मेरे गाँव के बूढ़े चेहरे पर
सिहर रही है उसकी रीढ़
मुहावरों में ही बात करने वाला
बूढ़ा सनाका खा गया है
फटी–फटी आँखों से ताक रहा है
अपने आस–पास के चेहरे
यूँ तो मेड़ों पर कुछ छियुल के पेड़ प्रयासरत हैं
पर इतना ही काफी नहीं है
हवाओं से कहो एक मोटी कथरी
सिलें मेरे खेतों के लिए
उनके पूरे विस्तार तक।

☯

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

दीवट का दिया

मैं तुम्हारी कोठरी के दीवट पर रखा दिया हूँ
तुम मेरे पास आओ
लटियाये बालों को सुलझाओ
पाटी पारो
माथे पर लगाओ
लाल रंग वाली बड़ी टिकुली
माँग भर सेन्दुर,
एड़ी भर महावर रचाओ
और मैं तुम्हारी मद्धिम रोशनी में झिलमिलाऊँ
जैसे छरहर नीम की छाँह में
झिलमिलाता है चाँद।

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gran

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

C-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Gra

न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh. Funding by IKS-MoE-2025-Grant
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन
न रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन रामकृष्ण प्रकाशन

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

केशव तिवारी

जन्म : 04 नवम्बर, 1960,

अवध के एक जिले प्रतापगढ़ के एक छोटे से गाँव जोखू का पुरवा में।

माँ : स्व. श्रीमती चमेली देवी

पिता : स्व. श्री रामनागेश तिवारी

शिक्षा : स्नातक (वाणिज्य)

प्रकाशन : *साक्षात्कार, कृतिओर, निष्कर्ष, अक्षरा, अलाव, उत्तरार्ध, आशय, सर्वनाम, कथन, साप्ताहिक हिन्दुस्तान,* साम्य आदि पत्रिकाओं में कवितायें एवं कुछ समीक्षायें।

1991 से सक्रिय लेखन।

संयुक्त सचिव उ.प्र. जनावादी लेखक संघ।

सम्प्रति : हिन्दुस्तान लीवर लिमिटेड के विक्रय विभाग में बांदा में कार्यरत

सम्पर्क : केशव तिवारी
द्वारा पांडेय जनरल स्टोर,
कचेहरी चौक, बांदा (उ.प्र.)

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant

ISBN : 81-7365-204-X

Gandhi Memorial College Of Education Bantalab Jammu

रा.कृ.प्र.

रामकृष्ण प्रकाशन

CC-0 Agamnigam Digital Preservation Foundation,Chandigarh.Funding by IKS-MoE-2025-Grant